International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2017; Page No. 93-95

मृणाल पाण्डे का साहित्य के क्षेत्र में योगदान

ड़ॉ0 महेन्द्र सिंह

शोध–पत्र (हिन्दी), प्रवक्ता हिन्दी विभाग, सम्राट् पृथ्वी राज चौहान पी.जी. कॉलेज, रोहालकी किशनपुर, हरिद्वार, उत्तराखण्ड़, भारत।

प्रस्तावना

मृणाल पाण्डे हिन्दी साहित्य जगत् का एक जाना–पहचाना नाम है। इन्हें साहित्यानुराग विरासत में मिला है, मृणाल पाण्डे की माता शिवानी जानी–मानी उपन्यासकार एवं लेखिका थी। मृणाल पाण्डे की पहली साहित्यिक रचना प्रतिष्ठित हिन्दी साप्ताहिक 'धर्मयुग' में उस समय छपी जब वह युवावस्था की दहलीज पर थी। मृणाल जी ने अपने साहित्य में शहरी जीवन और ग्रामीण सामाजिक परिवेश में महिलाओं की स्थिति को केन्द्रिय विषय बनाया है तथा साथ ही साथ एक बदलते परिवेश के कारण रिश्तों की उधेड़बुन भी उनके साहित्य में नजर आती है। और समाज में व्याप्त भूखमरी, अन्धविश्वास, बेराजगारी, उत्पीड़न तथा मध्यम व निम्न वर्ग की अनेक समस्याओं को उन्होनें अपने साहित्य में स्थान दिया है। साहित्य के साथ–साथ मृणाल जी का पत्रकारिता के क्षेत्र में भी उच्चकोटि का कार्य रहा है। इन्होनें स्टार–न्यूज तथा दूरदर्शन चैनल पर हिन्दी बुलेटीन का सम्पादन कार्य किया तथा मृणाल जी प्रसार भारती के चेयरमैन पद, हिन्दुस्तान न्यूज–पेपर के सम्पादक पद पर भी कार्य कर चुकी हैं। इसके अतिरिक्त इन्होनें वामा, नन्दन एवं कादम्बिनी नामक प्रसिद्ध पत्रिकाओं का सम्पादन कार्य भी बड़ी कुशलता से किया है।

साहित्य को समाज का दर्पण माना गया है। साहित्य के माध्यम से हमें आज समस्त संसार की जानकारी प्राप्त होती है। साहित्य के माध्यम से ही वह सब मिल जाता है जिसकी हमें दैनिक जीवन में आवश्यकता होती है तथा जो हमें जीने के लिए प्रेरित करता है। मृणाल जी को माँ से मिली साहित्यिक प्रेरणा ही ऊंचाइयों तक ले गयी। इन्हें अपनी समकालीन साहित्यिक लेखिकाओं से ज्यादा सुविधाएं और समग्रता जिन्दगी में मिली है। अच्छी किताबें, पत्र–पत्रिकाएं आदि ने उनको सृजन कार्य में लगे रहने के लिए प्रेरित किया इसी कारण उनका सृजन बढ़ता रहा। उन्होनें जो लिखा वह सब अपने आप में एक सच्चाई का बखान करता है। उन्होने अपने साहित्य में दलितों, मध्यवर्गीयों, नीची जातियों के शोषण व पारिवारिक समस्याओं पर बारीकी से नजर डाली है। ''रचनात्मक गद्य की गहराई और पत्रकारिता की संप्रेषणीयता से समृद्ध मृणाल पाण्ड़े की कथा कृतियां हिन्दी जगत में अपने अलग तेवर के लिए जानी जाती हैं। उनकी रचनाओं में कथा का प्रवाह और शैली उनका कथ्य स्वयं बुनता है।''[1] इन्होनें अपने साहित्य क्षेत्र में उपन्यास, नाटक ,निबंध, कहानी संग्रह, रिपोर्ताज, संस्मरण आदि का सृजन किया है। जो निम्न प्रकार है–

उपन्यास

1. विरूद्ध
2. पटरंगपुर पुराण
3. अपनी गवाही
4. हमको दियो परदेश
5. रास्तों पर भटकते हुए
6. देवी

कहानी संग्रह

1. दरम्यान
2. शब्द बेधी
3. एक नीच ट्रेजड़ी
4. एक स्त्री का विदागीत
5. यानी की एक बात थी
6. बचुली चौकीदारिन की कढ़ी
7. चार दिन की जवानी तेरी

नाटक

1. मौजूदा हालात को देखते हुए
2. जो राम रचि राखा
3. आदमी जो मछुआरा नहीं था
4. चोर निकल के भागा
5. काजर की कोठरी(देवकी नन्दन खत्री के उपन्यास का नाट्य रूपान्तरण)

निबंध

1. परिधि पर स्त्री
2. स्त्रीः देह की राजनीति से देश की राजनीति तक

नारी–विमर्श (रिपोर्ताज/पत्रकारिता)

1. ओ उब्बीरी
2. बन्द गलियों के विरूद्ध
3. स्त्रीः लम्बा सफर
4. जहां औरते गढ़ी जाती हैं

इसके अतिरिक्त अग्रेंजी साहित्य में भी इनका सृजन कार्य हुआ है जो निम्न है–

1 द सब्जेक्ट इज वूमन
2.द डाटर्स डॉटर
3 माई ओन विटनेस
4 स्टेपिंग आउट लाइफ एंड सेक्सुअलिटी इन रूरल इण्डिया जब मृणाल जी 21 वर्ष की थी तो हिन्दी साप्ताहिक 'धर्मयुग' में इनकी पहली कहानी प्रकाशित हुई थी तभी से शुरू हुआ सफर आज भी अनवरत् जारी है। अपनी लगन और प्रतिभा के बल पर आज वे उस सफलता की ऊंचाई पर है जहां पहुचने की हसरत हर एक शख्स के दिल में होती है। मृणाल जी नें अपने साहित्य के माध्यम से उन तथ्यों को उजागर किया है जो हमारे समाज को प्रभावित करते रहे हैं। उन्होनें भारतीय समाज की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था के साथ–साथ समाज में व्याप्त असन्तुलन पर भी अपनी दृष्टि डाली है। इन्होनें बाल विवाह, दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, काला बाजारी, हत्या, बलात्कार, शोषण, दहेज प्रताड़ना जैसी अनेक समस्याओं का अपने साहित्य में बेबाकी से जिक्र किया है– '' हम लिखती हैं उस पर जो घट रहा है और जो अब नहीं घट

सकता। हम लिखती है अपनी मॉओं के बारे में जो सृष्टि के सृजन को छड़ी से पका रही हैं, सफाई कर रही हैं। हम आदेश में स्वर ऊंचा किए पिताओं के बारे में लिखती हैं। हम उन पुरूषो के बारे में लिखती हैं जो क्रूर, प्रतिहिंसक और घृणास्पद हैं। हम उन स्त्रियों के बारे में लिखती हैं जो सुखी हैं, तृप्त हैं। हम उन स्त्रियों के बारे में लिखती हैं जो प्रवंचित हुई है। हम उन स्त्रियों के बारे में लिखती हैं जिनसे अब और नहीं सहा जाता और जो अपने विदीर्ण चेहरे चाँद की ओर उठाकर मादा भेडियों के स्वर में विलाप करती हैं। हम बीते वर्षो पर लिखती हैं और आने वालो पर भी। और उस नो–मैंस–लैंड के बारे में भी जहां कोई किसी का नहीं, जहां स्त्री–पुरूष, बच्चे सब उल्काओं की तरह तैरते हैं।''[2]

मृणाल जी ने गरीबी तथा अमीरी दोनो ही परिस्थितियों में सामाजिक जीवन का आंकलन किया है। जिससे दोनो में पर्याप्त अन्तर को उन्होनें साहित्य के माध्यम से स्पष्ट किया है–'' गरीबी की सचमुच की दुनियां में हमारी– आप की पढ़ी–लिखी शहरी मध्यवर्गीय दुनियां का आदर्शवाद या भावुक सोच–विचार, कहीं एक अकल्पनीय विलासिता है। लाख महंगाई के बावजूद आज हमारे शहरी मध्यवर्ग के पास सुख–सुविधा के अपेक्षाकृत बेहतर साधन हैं, दो जून की रोटी का पक्का ठिकाना है और अपने (प्रायः सीमित) बच्चों के साथ बिताने को चैन तथा प्यार भरा समय और वातावरण दोनों ही कमोबेश हैं। इसके उलट गरीबी की रेखा के नीचे पलते परिवारों के पास न तो हर को पालने–पोसने को समुचित साधन होते हैं और न ही देने को समय। अफसोस की बात यह है कि इसी वर्ग की मॉओं समेत तमाम व्यस्कों पर घर के बाहर काम करने के आर्थिक दबाव सबसे प्रबल हैं अतः मां के घर से बाहर जाकर काम करने की स्थिति में इन बच्चों को किसी भी बुजुर्ग का साया नहीं मिल पाता, जिससे उनके कुपोषित होने के साथ–साथ अशिक्षा तथा आवारगी का शिकार बनने की सम्भावना सबसे प्रबल है।''[3]

चूकि साहित्यकार हमारें समाज का सदस्य होता है इसलिए वह समाज की सभी कमजोरियों तथा अमीरी, गरीबी आदि सभी से भली प्रकार परिचित होता है। हिन्दी तथा अंग्रेजी अखबारों के कार्यालयों की स्थिति के बारे में भी मृणाल जी ने दृष्टि डाली है जिसमें दोनों को अलग नजरिए से देखा जाता है–'' प्रकाशन गृह के अंग्रेजी सम्पादकों और मैनेजरों की स्थिति एकदम अलग थी। उनका लकदक दफ्तर नई दिल्ली के बीच स्थित एकदम नई , सेंट्रली एयर कंडीशण्ड भवन में चकाचौंध से भरा था। हिन्दी पत्रिकाओं के सम्पादकीय कार्यालय की पुरानी इमारत पुरानी दिल्ली की तेज और बदबूदार गलियों के बीच थी।''[4] हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में हमारे यहां शुरू से ही भेदभाव है।

हमारे समाज में कुछ रिश्ते केवल मर्यादा निभाने के लिए आज भी जोड़ दिए जाते हैं ताकि कुल की मर्यादा बनी रहे। एक बेटी की शादी को कुल की मर्यादा निभाने के लिए एक ऐसे परिवार में कर दिया जाता है जहां खाने को अन्न भी नहीं है। लड़की का पिता कई महीनों के बाद लड़की के पास जाता है–'' क्या भून रही है बेटी? पिता ने पूछा।

'कुलीन सम्बंध भून रही हूं बाबू जी। हम तो सम्बंध ही खाते–पकाते हैं ? बेटी ने आंसू छिपाने के लिए मुहँ फेर लिया।''[5] हमारे समाज के लोग आज भी ऐसी रूढ़िवादिता का शिकार हैं जो मर्यादा के लिए बेटियों का भविष्य तक नहीं देखते। यहां एक नहीं अनेक बेटीयां कुल–मर्यादा के नाम पर भेंट चढ़ा दी जाती हैं। मृणाल जी ने स्त्रियों की दशा का वर्णन भी अपने साहित्य में किया है कैसे समाज में आज भी स्त्रिया दोयम दर्जे का शिकार हैं–'' समाज में स्त्रीत्व की मूल अवधारणा नकारात्मक है, लगभग सभी धार्मिक और दार्शनिक दायरों में स्त्री को पुरूष के सन्दर्भ में एक अपूर्ण और सापेक्ष जीवन के रूप में ही देखा गया है।''[6] आज भले ही लोग सतीप्रथा जैसी कुरीतियों को गलत मानते हैं लेकिन दूसरी ओर वास्तविकता कुछ और ही दर्शाती है–'' सती प्रथा पर लानते भेजने के बावजूद हमारे कईं देशवासी आज भी सतियों की समाधि पर मेले लगाते, जुलूस निकालते हैं, दहेज हत्याओं का विरोध करने के बावजूद खुद अपने घर में बेटी होने पर रोते–झींकते हैं, और गर्भस्थ–भ्रूण की लिंग जांच के बाद कन्या भ्रूण को नष्ट करना कतई गलत नहीं मानते। यानी खुद तो अपनी लड़की को अवांछित मानते हैं पर जब दूसरे लोग उसे दुरदुराएं तो महिला संस्थानों से कहते है–ससुराल़ में धरना दो, वे लोग हमारी बेटी को सता रहे हैं।''[7]

साहित्य के द्वारा हमें समाज की वास्तविक स्थिति का ज्ञान प्राप्त होता है। मृणाल जी ने जगह–जगह घुमकर आखों देखी अनेक घटनाओं व समस्याओं को अपने साहित्य में स्थान दिया है ताकि लोगों को सच्चाई पता चल सके। हमारे देश में आज भी बहुत सी जगह ऐसी है जहां मजदूरी के बदले मर्दो को रूपये नहीं शराब दी जाती है जिससे परिवार का माहौल बिगड़ता है–'' हैदराबाद की 'अन्वेषी' संस्था की रपट के अनुसार कई मालगुजार अपने मजदूरों को उनकी इच्छानुसार उनकी मजूरी रूपयों की बजाय अरक की थैलियों के रूप में दे रहे हैं। लिहाजा दिहाड़ी खत्म कर जब घर लौटते हैं तो पेट में होती है शराब और टेंट होती है एकदम खाली। गृहस्थी चले तो कैसे? महिलाएं विरोध करती तो घर में पिटती। बाहर आती तो उपहास का पात्र बनती।''[8] गरीबी के कारण लोग स्त्रियों को शहरो में कामकाज के लिए भेज देते हैं जहां अधिकतर उनका शोषण किया जाता रहा है–'' गाँठ में पैसा लेकर आई या भूस्वामित्व वाली स्त्रियों की तादात इनमें बहुत कम है। अधिकतर के लिए रोज कुआं खोदना रोज पानी पीना, यही सच है। अपने पीछे छोड़े गॉव समाज से इन औरतों का रिश्ता बहुत क्षीण–सा रह जाता है, लिहाजा उधर से मद्द मिलने की भी आशा नहीं होती।''[9] देश में आज भ्रूण हत्याएं हो रही हैं तथा शिक्षित वर्ग ही इसे बढ़ावा दे रहा है–''डॉक्टरों की कृपा और समाज के दबाव में गर्भाशय में पल रही मासूम बच्ची शिशु जन्म से पहले ही जीने के अधिकार से वंचित कर दी जाती है। डॉ. जैन का कहना है कि समाज में इस तरह का दबाव है, माता–पिता ऐसा ही चाहते हैं और डॉ. इसमें मदद करते हैं। जब दो पार्टियां तैयार हैं तो तीसरा कोई कुछ नहीं कर सकता।''[10] आज भारतीय समाज में उच्च व मध्यम वर्ग की महिलाओं की स्थिति भी अच्छी नहीं है उनका भी शोषण बरकरार है–'' दलित औरतें आम मध्यम व उच्चवर्गीय व जातीय औरतों की अपेक्षा ये ज्यादा खुशहाल हैं। दलित वर्ग में औरतों को वह पीड़ा, छटपटाहट, तिरस्कार और संवेदनशीलता नहीं बर्दाश्त करनी पड़ती है। जिसके लिए सवर्णो की औरतें सदियों से अभिशप्त हैं।''[11] बाल मजदूरी भी हमारे यहां खूब होती है जहां मासूमों की जान से खेला जाता रहा है–'' मजबूरी पाँच –छः साल की उम्र के बच्चे खतरों से भरपूर कारखानों में आठ–दस घंटे काम करते हैं। हर मुमकिन जिल्लत और यातना सहकर बचपन पूरा करते हैं या बीच ही में बीमार पड़कर या कारखानों में दूर्घटना का शिकार होकर बे–इलाज मर जाते हैं।''[12]

हमारे देश में आज भी स्त्री मृत्यु दर बढ़ने का एक कारण असुरक्षित गर्भपात भी है जिसे कम लोग जानते हैं–''कम लोग जानते हैं कि भारत में 14.5 प्रतिशत माताओं की मृत्यु का कारण असुरक्षित गर्भपात है।''[13] कुछ पुरूष तो अपनी पत्नियों की नसबन्दी कराकर उन्हें घर से ही निकाल देते हैं जो अपनी तुच्छ मानसिकता का परिचय देते हैं–''उनके पतियों ने मिलने वाली सहायता राशि भी तुरन्त अपनी टेंट में खोंसी और तदुपरान्त कुछ पत्नियों को मायके खदेड़ दिया गया।''[14] मृणाल जी ने अपने साहित्य में कुछ ऐसे आंकड़े भी प्रस्तुत किए हैं जो हमारे स्वास्थ्य नीति की पोल खोलते हैं तथा हमे सावधान करते हैं–'' यह एक मिथक है कि इस रोग के जद में समलैंगिक जोड़े ही आते हैं। राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन

(नाको) के आंकडों के अनुसार भारत में इस रोग के 73.8 प्रतिशत मामलों में एच.आई.वी. संक्रमण का जिम्मेदार स्त्री–पुरूष के बीच असुरक्षित यौनाचार है। 8.8 प्रतिशत मामलो का कारण ही रोगी द्वारा संक्रमित सुइयों द्वारा मादक द्वव्य लेना है। मात्र 0.8 प्रतिशत मामलो में ही समलैंगिक यौन–संबंध कारण रहा है।''[15] ऐसी जानकारी हमे सचेत करती है। कई पिछड़े तथा आदिवासी इलाको में सामने आया कि शिशु तथा माता की मृत्यु अधिकांशतः अंधविश्वास, रूढ़िवादिता तथा सुविधाओं की कमी के कारण होती है– ''गाँवों में 90 प्रतिशत से ज्यादा स्त्रियां एक अथवा एकाधिक स्त्री रोग अथवा रजित रोगो से पीड़ित है। लगभग 50 किस्मो के प्रजनन प्रदेश के संक्रमण स्त्रियों में पाए गए।''[16] ''अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के डॉ. व्रहन चन्द कंधारी के मुताबित 'समाज के मूल्य देखते–देखते बदल गए हैं। पहले लोग ज्यादातर वेश्याओं के संसर्ग से गुप्त रोग लाते थे, पर आज तो सम्भ्रान्त रिहायशी मकानों में रहने वाली औरतों से लाते हैं। पहले लोग ऐसी बाते छिपाते थें, पर अब तो मरीज कहते हैं कि मै एक मित्र के साथ सोया था तभी से.....। वह मित्र उससे पहले और भी मित्रों के साथ सोयी होगी जो उसे रोग का गुप्त–दान दे गए।''[17]

राजस्थान जैसे राज्यों में बाल विवाह का आज भी प्रचलन है जो छोटी उम्र में ही अपनी बेटीयों की शादी कर देते हैं। ''यहां बाल विवाह आम बात है। 'अक्खा–तीज' के अवसर पर सामूहिक रूप से दर्जनों शिशुओं का ब्याह कराया जाता है। 1992–93 के राष्ट्रीय परिवार–स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार राजस्थान में स्त्रियों का ब्याह औसतन 14.6 वर्ष की उम्र में हो जाता है। दो तिहाई किशोरवय लडकियॉ तथा एक तिहाई किशोरवाय (13–19) लडके विवाहित हैं। 29 वर्ष की उम्र तक आते–आते स्त्रियां औसतन चार बच्चों की माँ बन जाती हैं।''[18]

मृणाल जी आधुनिक युग की एक सफल साहित्यकार हैं जिन्होने अपने भावों को शब्दों के माध्यम से प्रकट किया है। साहित्य समाज का दर्पण कहा जाता है और लोग साहित्य के माध्यम से समाज को जानते हैं। मृणाल जी ने अपने साहित्य में समस्त मानवीय भावनाओं को उजागर किया है। उनके साहित्य में हमें समाज से जुड़ी राजनीतिक समस्याएं, वैवाहिक समस्याएं, सांस्कृतिक समस्याएं, शोषण की समस्याएं, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, आंचलिकता तथा नारी विषयक चिंतन सभी देखने को मिलता है। उन्होने हमेशा गरीब, दलित तथा शोषित वर्ग की आवाज बनने की कोशिश की है तथा समाज में उनकों सम्मान मिलें इसका प्रयास किया है, क्योकि साहित्यकार का उद्देश्य एक मानवीय चेष्टा है वह सदा 'सहितस्य भावःसाहित्यं' की भावना से अपना साहित्य लिखता है। यही भावना हमें मृणाल जी के साहित्य में दृष्टिगोचर होती है। मृणाल जी ने साहित्य के माध्यम से समाज को एक नई दिशा देने का कार्य किया है। साहित्य के क्षेत्र में उनका अमूल्य योगदान है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. मृणाल पाण्डे– पटरंगपुर पुराण, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0 दरियागंज नई दिल्ली, पहला संस्करण 1983, दूसरा संस्करण 1992, तीसरा संस्करण 2010– पृष्ठ संख्या, आवरण पृष्ठ।
2. मृणाल पाण्डे– देवी, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0 दरियागंज नई दिल्ली, पहला संस्करण 1999, दूसरी आवृति 2007–पृष्ठ संख्या 23–24
3. मृणाल पाण्डे–स्त्रीः देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0 दरियागंज नई दिल्ली, पहला संस्करण 1987, दूसरा सं0 2002, तीसरा सं0 2011– पृष्ठ संख्या 76
4. मृणाल पाण्डे– अपनी गवाही, राधाकृष्ण प्र0 प्रा0 लि0 जगतपुरी दिल्ली, पहला सं0 2003– पृष्ठ संख्या 45
5. मृणाल पाण्डे– देवी, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0 दरियागंज नई दिल्ली, पहला संस्करण 1999, दूसरी आवृति 2007–पृष्ठ संख्या 158
6. मृणाल पाण्डे–स्त्रीः देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0 दरियागंज नई दिल्ली, पहला संस्करण 1987, दूसरा सं0 2002, तीसरा सं0 2011– पृष्ठ संख्या 14
7. वही, पृष्ठ संख्या 18
8. मृणाल पाण्डे– परिधि पर स्त्री, राधाकृष्ण प्र0 प्रा0 लि0 दरियागंज नई दिल्ली, पहला सं0 1996, पहली आवृति 1998– पृष्ठ संख्या 30
9. वही, पृष्ठ संख्या 49
10. मृणाल पाण्डे– बन्द गलियों के विरूद्ध, राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 सुभाष मार्ग नई दिल्ली, पहला सं0 2001, पहली आवृति 2004– पृष्ठ संख्या 104
11. वही, पृष्ठ संख्या 171
12. वही, पृष्ठ संख्या 120
13. मृणाल पाण्डे– ओ उब्बीरी, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0लि0 दरियागंज नई दिल्ली, पहला सं0 2003, पहली आवृति 2006– पृष्ठ संख्या 21
14. वही, पृष्ठ संख्या 28
15. वही, पृष्ठ संख्या 88
16. वही, पृष्ठ संख्या 204
17. मृणाल पाण्डे– बन्द गलियों के विरूद्ध, राजकमल प्रकाशन प्रा0.लि0 सुभाष मार्ग नई दिल्ली, पहला सं0 2001, पहली आवृति 2004– पृष्ठ संख्या 76
18. मृणाल पाण्डे– ओ उब्बीरी, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0लि0 दरियागंज नई दिल्ली, पहला सं0 2003, पहली आवृति 2006– पृष्ठ संख्या 242